धर्मग्रंथों में विश्वास

रेटिंग:

विविरण: ?????? ?? ????? ?? '???????' ??? ????? ????????? ???? ???? ?? ?? ???? ??? ??? ??? ??? ??? ??, ???? ??????, ?? ????? ??????????? ??? ??????? ?? ????? ???? ???? ??? ?? ??? ?? ??? ?? ????? ?? ?? ????? ?? ???? ????? ?? ??????????? ?? ??? ??? ????? ????? ????, ?? ?? ??????????? ?? ????????? ?????: ?????? ?? ??????

श्रेणी: पाठ › इस्लामी मान्यताएं › आस्था के अनुच्छेद

दवारा: Imam Mufti

प्रकाशति हुआ: 08 Nov 2022

अंतमि बार संशोधति: 07 Nov 2022

आवश्यक शर्तें

·इस्लाम के स्तंभों और आस्था के अनुच्छेदों का परचिय (2 भाग)।

उद्देश्य

·धर्मग्रंथो के प्रकट होने के उद्देश्य को समझना।

·यह जानना कि'धर्मग्रंथो पर विश्वास' मे क्या शामलि है।

·दो मामलों के बीच अंतर करना: मूल तौरात, इंजील, जबूर और और *???????* बाइबलि।

·इस बात को मानना कि क़ुरआन वास्तव में कई मामलों में अन्य धर्मग्रंथों से अलग है।

धर्मग्रंथो में विश्वास इस्लामी आस्था का तीसरा अनुच्छेद है।

आइए सबसे पहले देखें कि इन्हें क्यों प्रकट किया गया था।

(1) एक पैगंबर को दयिा गया ग्रंथ धर्म सीखने और अल्लाह और साथी मनुष्यों के प्रतिदायित्वों को जानने का स्त्रोत है। अल्लाह ईश्वरीय धर्मग्रंथो को प्रकट करके मनुष्यों का मार्गदर्शन करता है जसिके माध्यम से उन्हें अपनी रचना के उद्देश्य का एहसास होता है।

(2) इसका हवाला देकर इसके अनुयायियों के बीच धार्मकि ववािद और मतभेद सुलझाए जा सकते हैं।

(3) धर्मग्रंथ किसी पैगंबर की मृत्यु के बाद कम से कम कुछ समय के लिए धर्म को भ्रष्ट होने से सुरक्षित रखने का काम करते हैं। हालांकि हमारे पैगंबर को बताया गया क़ुरआन समय के अंत तक भ्रष्टाचार से सुरक्षित रहेगा। महान अल्लाह कहता है:

'वास्तव में, यह हम ही हैं जिन्होंने संदेश भेजा और वास्तव में, हम इसके संरक्षक होंगे।' (क़ुरआन 15:9)

(4)ताकि मनुष्यों के विरुद्ध दूतों द्वारा लाया गया अल्लाह का निर्णायक तर्क उनकी मृत्यु के बाद भी बना रहे।

"ये सभी दूत शुभ सूचना सुनाने वाले और डराने वाले थे, ताकि इन दूतों के पश्चात् लोगों के लिए अल्लाह पर कोई तर्क न रह जाये और अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।" (क़ुरआन 4:165)

जब तक धर्मग्रंथ मौजूद हैं तब तक कोई यह दलील नहीं दे सकता है कि पैगंबरो और उनके संदेश अस्तित्व में नहीं हैं।

धर्मग्रंथो पर विश्वास में शामिल है:

(i) मानना की अल्लाह ने उन्हें सच में प्रकट किया।

(ii) कुछ धर्मग्रंथो के नामों में विश्वास करना।

(iii) विश्वास करना कि उनमें सच्चाई है। क्योंकि क़ुरआन से पहले के धर्मग्रंथो को बदल दिया गया है, इसलिए हम उन *???* धर्मग्रंथो में विश्वास करते हैं जो पैगंबरो के लिए प्रकट हुए थे।

(iv) विश्वास करना कि क़ुरआन उनका गवाह है और उनकी पुष्टि करता है। सत्य एक है और हमेशा रहता है, और इस प्रकार क़ुरआन उस सत्य की पुष्टि करता है जो उनमें था। कानून के मामले मे, क़ुरआन ने पिछले धर्मग्रंथो को निरस्त कर दिया है।

पहला, एक मुसलमान दृढ़ता से मानता है कि अल्लाह ने अपने दूतों पर मानवजाति का मार्गदर्शन करने के लिए ईश्वरीय धर्मग्रंथो को प्रकट किया था। मुसलमानों का मानना है कि क़ुरआन केवल अल्लाह का बोला जाने वाला शब्द नहीं है, बल्कि यह कि अल्लाह ने पैगंबर मुहम्मद (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) से पहले के पैगंबरो से भी बात की थी।

"...और मूसा से अल्लाह ने सीधे बात की।" (क़ुरआन 4:164)

अल्लाह कहता है सच्चा आस्तिक वो है जो:

“...ऐ मुहम्मद! आप पर उतारी गयी (पुस्तक क़ुरआन) तथा आपसे पूर्व उतारी गयी (पुस्तकों) पर विश्वास करो” (क़ुरआन 2:4)

सभी धर्मग्रंथों का सबसे महत्वपूर्ण और केंद्रीय संदेश केवल अल्लाह की पूजा करना था।

“और नहीं भेजा हमने आपसे पहले कोई भी दूत, परन्तु उसकी ओर यही वह्यी (प्रकाशना) करते रहे कि मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है। अतः मेरी ही पूजा करो।” (क़ुरआन 21:25)

दूसरा, हम क़ुरआन में वर्णित धर्मग्रंथो में विश्वास करते हैं:

(i) क़ुरआन खुद पैगंबर मुहम्मद को प्रकट किया गया था।

(ii) तौरात (अरबी में तौराह) पैगंबर मूसा को प्रकट किया गया (आज पढ़े गए पुराने नियम से अलग)।

(iii) सुसमाचार (अरबी में इंजील) पैगंबर यीशु को प्रकट किया गया था (आज चर्चों में पढ़े जाने वाले नए नियम से अलग)।

(iv) ज़बूर, पैगंबर दाऊद पर प्रकट किया गया था।

(v) मूसा और इब्राहीम के ग्रंथ (अरबी में सुहुफ)।

हमारी एक आम धारणा है कि अल्लाह ने और भी धर्मग्रंथो को प्रकट किया था जिनके नाम और विशिष्टताएं हमें पता नहीं हैं। इसलिए हम निश्चित रूप से इस बात की पुष्टि नहीं कर सकते हैं कि मुहम्मद से पहले अन्य धर्मग्रंथों (ऊपर बताये गए धर्मग्रंथो के अलावा) को अल्लाह की ओर से प्रकट किया गया था।

तीसरा, मुसलमान मानते हैं कि उनमें जो कुछ भी है वो सच है और पिछले धर्मग्रंथो में उसे बदला या भ्रष्ट नहीं किया गया है। इसके बारे मे नीचे विस्तार से बताया जाएगा ताकि यह स्पष्ट हो जाए और कोई भ्रम न रहे।

चौथा, विश्वास करना कि अल्लाह ने क़ुरआन को पिछले धर्मग्रंथों के गवाह के रूप में और उनकी पुष्टि करने के लिए प्रकट किया, जैसा कि अल्लाह कहता है:

“और (ऐ मुहम्मद!) हमने आपकी ओर सत्य पर आधारति पुस्तक (क़ुरआन) उतार दी, जो अपने पूर्व की पुस्तकों को सच बताने वाली तथा संरक्षक है” (क़ुरआन 5:48)

मतलब क़ुरआन यह पुष्टकिरता है की पहले के धर्मग्रंथों में जो कुछ था वो सत्य है, और मानव हाथों ने जो भी परविर्तन कएि हैं उन्हें खारजि करता है, और क़ुरआन द्वारा लाए गए कानून पछिले धर्मों द्वारा लाए गए कसिी भी कानून को रद्द करते हैं और नरिस्त करते हैं।

मूल धर्मग्रंथ और बाइबलि

हमें दो मामलों के बीच अंतर करना चाहएि: *???* तौरात, सुसमाचार, और ज़बूर और *???????* बाइबलि। हम मानते हैं कि*???* अल्लाह के रहस्योद्घाटन थे, लेकनि *???????* की बाइबलि में सटीक मूल ग्रंथ नहीं है।

क़ुरआन को छोड़कर आज कोई भी धर्मग्रंथ मौजूद नहीं है जो अपनी मूल भाषा मे हो। बाइबलि अंग्रेजी में प्रकट नहीं कयिा गया था। आज की बाइबल की वभिन्नि पुस्तकें अनुवादों के अनुवाद हैं और वभिन्नि संस्करण मौजूद हैं। ये अनुवाद उन लोगों द्वारा कएि गए थे जनिका ज्ञान या ईमानदारी ज्ञात नहीं है। परणिामस्वरूप, कुछ बाइबलि दूसरों से बड़ी हैं और उनमें अंतर्वरिोध और आंतरकि वसिंगतयिां हैं! कोई मूल मौजूद नहीं है। दूसरी ओर, क़ुरआन एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो अपनी मूल भाषा में आज भी अस्तत्वि में है और आंतरकि रूप से बनिा कसिी वरिोधाभास के मौजूद है। यह आज भी वैसा ही है जैसा कि1400 साल पहले प्रकट हुआ था, जो याद रखने और लखिने की एक सटीक परंपरा द्वारा प्रसारति कयिा गया था। बहुत कम लोगों ने कभी पूरी बाइबलि को कंठस्थ कयिा है, यहां तक कि किसी पोप ने भी नहीं, जबकि संपूर्ण क़ुरआन को लगभग हर इस्लामी वदि्वान और सैकड़ों हजारों आम मुसलमान पीढ़ी दर पीढ़ी कंठस्थ करते हैं। इसे संरक्षण कहते हैं!

पछिले धर्मग्रंथो में अनवािर्य रूप से शामलि हैं:

(i) मनुष्य की रचना और पहले के राष्ट्रों की कहानयिां, आने वाले की भवषि्यवाणयिां, न्याय के दनि से पहले के चन्हि और नए पैगंबर, और अन्य समाचार।

आज सभाओं और चर्चो में पढ़ी जाने वाली बाईबलि की कहानयिां, भवषि्यवाणयिां और समाचार आंशकि रूप से सत्य और आंशकि रूप से असत्य हैं। इन पुस्तकों में अल्लाह द्वारा प्रकट कएि गए मूल ग्रंथ के कुछ अनुवादति अंश, कुछ पैगंबरो के कथन, वदि्वानों की मशि्रति व्याख्या, शास्त्रयिों की त्रुटयिां, और द्वेषपूर्ण जोड़ना और छोड़ना शामलि हैं। अंतमि और भरोसेमंद ग्रंथ क़ुरआन हमें कल्पना से तथ्य को अलग करने में मदद करता है। इसमें असत्य मे से सत्य को आंकने की कसौटी है। उदाहरण के लएि,

बाइबलि में अभी भी कुछ स्पष्ट अंश हैं जो अल्लाह के एक होने की ओर इशारा करते हैं।[1] इसके अलावा, पैगंबर मुहम्मद के बारे में कुछ भवष्यिवाणयिां बाइबलि में भी पाई जाती हैं। [2] फरि भी, ऐसे अंश हैं यहां तक कि पूरी कतिाबें भी लगभग पूरी तरह से लोगों की जालसाजी और करतूत मानी जाती है। [3]

(ii) कानून और नयिम, मूसा के कानून की तरह वैध और नषिद्धि।

अगर हम कानून मान लें, यानी पछिली कतिाबों में नहिति 'वैध और नषिद्धि' भ्रष्टाचार का शकिार नहीं हुए हैं, तो क़ुरआन फरि भी उन फैसलों को रद्द करता है, क्योंकि यिह उस पुराने कानून को रद्द कर देता है जो अपने समय के लिए उपयुक्त था और अब लागू नहीं है। उदाहरण के लिए, आहार, अनुष्ठान प्रार्थना, उपवास, वरिासत, ववािह और तलाक से संबंधति कई पुराने कानूनों को इस्लामी कानून द्वारा नरिस्त कर दयिा गया है, जबकि अन्य वैसे ही हैं।

क़ुरआन

क़ुरआन अन्य धर्मग्रंथों से नम्निलखिति मामलों में अलग है:

(1) क़ुरआन चमत्कारी और अनुपम है। कोई भी मनुष्य इसके जैसा नहीं बना सकता है।

(2) क़ुरआन के बाद अल्लाह की ओर से और कोई धर्मग्रंथ प्रकट नही होगा। जसि तरह पैगंबर मुहम्मद अंतमि पैगंबर हैं, उसी तरह क़ुरआन अंतमि ग्रंथ है।

(3) अल्लाह ने क़ुरआन को परविर्तन से बचाने, उसे भ्रष्टाचार से बचाने और उसे वकिृति से बचाने की जम्मिेदारी अपने ऊपर ली है। दूसरी ओर, पछिले धर्मग्रंथो में परविर्तन और वकिृति हुई है और वे अपने मूल रूप में नहीं है।

(4) क़ुरआन पछिले धर्मग्रंथो की पुष्टि करता है उनके लिए एक भरोसेमंद गवाह है।

(5) क़ुरआन उन्हें नरिस्त करता है, जसिका अर्थ है कि यिह पछिले धर्मग्रंथों के कई फैसलों को रद्द करता है और उन्हें अनुपयुक्त बताता है। इस प्रकार पुराने धर्मग्रंथों के कानूनों का अब लागू नहीं कर सकते हैं, क़ुरआन जो लाया है उससे पछिले फैसलों को रद्द कर दयिा गया है या उनकी पुष्टि की गई है।

फुटनोट:

[1] उदाहरण के लिए मूसा की घोषणा: **"ऐ इस्राइल, सुन, यहोवा हमारा ईश्वर है, यहोवा एक ही है" (व्यवस्थाविवरण 6:4)**और यीशु की घोषणा: **"... सभी आज्ञाओं में से पहली है, सुनो, ऐ इस्राइल; यहोवा हमारा ईश्वर है, यहोवा एक ही है।" (मरकुस 12:29)**

[2] व्यवस्थाविवरण 18:18, व्यवस्थाविवरण 33:1-2, यशायाह 28:11, यशायाह 42:1-13, हबक्कूक 3:3, यूहन्ना 16:13, यूहन्ना 1:19-21, मत्त
21:42, 43 और इससे भी अधिक देखें।

[3] उदाहरण के लिए, कृपया अपोक्रफि़ा की पुस्तकों को देखें।

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/15

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।